PHILOSOPHY

B.A. (Hons), Paper III (Part II)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

(A) Right and Good (उचित और शुभ):-

→ उचित कर्म वह है जो नैतिक नियमों के अनुरूप हो। उचित कर्मों से नैतिक नियमों की सिद्धि होती है और नैतिक नियमों से सर्वोच्च शुभ की। अतः 'उचित' शुभ की प्राप्ति का साधन है।

→ 'उचित' शब्द सदा साधन के लिये प्रयुक्त किया जाता है, पर 'शुभ' लक्ष्य और साधन दोनों के लिये। प्रत्येक सापेक्षिक शुभ किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन होता है अतः उसे उचित कहा जा सकता है।

इस अर्थ में जो शुभ है वह उचित है और जो उचित है वह शुभ भी है। पर 'सर्वोच्च शुभ' के लिये, जो किसी अन्य आदर्श की प्राप्ति का साधन नहीं हो सकता, 'उचित' प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता है।

→ औचित्य का संबंध कर्तव्य से है और शुभ का धर्म से। वैसे कर्म जो नैतिक विधि के द्वारा मान्य हैं, हमारे कर्तव्य हैं और वे उचित हैं। वैसे लक्ष्य, जिन्हें सिद्ध करने के लिये मनुष्य को ~~अनवरत~~ अनवरत चेष्टा करनी चाहिये, वे ही धर्म हैं और वे शुभ हैं। अतः 'शुभ' शब्द कर्तव्य और धर्म दोनों के लिये व्यवहृत हुआ।

→ वैसे विद्वान, जो 'उचित' प्रत्यय की प्रधानता मानते हैं; उनके लिये कोई नैतिक नियम ही मानव-आचरण का मापदण्ड होता है। नैतिक नियमों को स्थिर करना ही उनका लक्ष्य है। वैसे लोग, जो शुभ को ही आधारभूत प्रत्यय बतलाते हैं, उनका लक्ष्य मानव-जीवन का परम-लक्ष्य ~~निश्चित है~~ निर्धारित है। कुछ लोगों ने सुख को (~~Mill, Bentham, Sidgwick आदि~~), कुछ लोगों ने आत्मपूर्णता इत्यादि को जीवन का परम लक्ष्य बतलाया है।

(B) Duty and Obligation (कर्तव्य और दायित्व) :-

→ कर्तव्य मनुष्य के विवेक और वासनाओं के द्वन्द्व का संकेत करता है। विवेक और वासना में द्वन्द्व होने के कारण ही ये दोनों, व्यक्ति को अपनी ओर खींचते हैं। इनमें वह, जो नैतिक नियम के अनुरूप है, उचित है और ऐसे ही कार्यों की बाध्यता व्यक्ति महसूस करता है; यही बाध्यता असली उसका कर्तव्य है। अर्थात् वैसे कार्य जिनकी संगति नैतिक आदर्श से हो, वे उसके कर्तव्य हैं, और वह उन्हें करने के लिये बाध्य होता है। अतः जो उचित है, वही कर्तव्य है।

→ कर्तव्य और दायित्व सापेक्ष हैं, कर्तव्य के साथ ही दायित्व लगा रहता है। जब हम जानते हैं कि यही कर्तव्य है तो 'ऐसा ही करना चाहिये' की भावना तो उसी में छुपी हुई है; इसी भावना को दायित्व कहते हैं।

→ 'कर्तव्य' का अर्थ है 'जो करना चाहिये' अर्थात् जो हमारा दायित्व है। एक नैतिक प्राणी होने के कारण हमें जो करना चाहिये, वही कर्तव्य है। कर्तव्य अधिकार-सापेक्ष है। जो हमारा अन्य के प्रति कर्तव्य है वही उनके लिये उनका अधिकार है होता है और जो अन्य का हमारे प्रति कर्तव्य है, वही हमारा अधिकार है। इस प्रकार किसी के प्रति यदि हमारा दायित्व है तो उसका भी हमारे प्रति कुछ दायित्व होगा।

कोई भी व्यक्ति अपने अधिकारों की सुरक्षा का तभी हकदार होता है जब वह अपने कर्तव्यों का पालन करे। यदि हम ही अपने कर्तव्यों का उल्लंघन करें तो अधिकार अधिकार की रक्षा कैसे होगी? मनुष्य के जितने कर्तव्य हैं अर्थात् उसका जितना दायित्व है, उतने ही उससे संबद्ध उतना ही अधिकार भी उसे है।

Scanned with CamScanner